॥ वर्षाबहार ॥

सिद्धि श्री साम्राज्य महाराजाधिराज श्रीसीता-
रामचन्द्र कृपापात्राधिकारी श्रीमहाराजासाहब
बहादुर वेङ्कटरमणसिंहजू देव G. C. S. I.
रीवाँनरेश के तहसील स्कूल मऊगञ्ज के हेड
माष्टर श्रीकवीन्द्र शिरोमणि केशववंशी
सनाढ्य मिश्र श्यामसेवक रचित ।

उमें पावसऋतु के अत्यन्त रसीले कवित्त, सवैया,
सांवनी, कजरी, मलार इत्यादि वर्णित है ।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन
द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

॥ काशी ॥

रजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

स० १८[illegible]५ ई० ।

श्रीगणेशाय नमः ।

वर्षाबहार ।

दोहा ।

सुन्दर श्रीघनश्याम नव दामिनि राधे सङ्ग ।
प्रेम-नीर बरसत रहैं निज प्रेमिन के अङ्ग ॥ १ ॥
घन सो तन पटपीतछबि चपला सी छहराति ।
श्रीघनश्याम शरीर में पावस ऋतु दरसाति ॥२॥
केश मेघ दामिनि दसन बैन कोकिला भाज ।
दरसत राधेबदन में पावस अरु ऋतुराज ॥ ३ ॥
सोहत राधे चिवुक पै श्याम बिन्दु बडभाग ।
हिम आम फल में मनो यह कौली को दाग॥४॥
चिवुक बिन्दु नहिं यह रच्यो चौकी मदन सोनारु।
कुन्दन की तामें जरो यह नीलम नग चारु॥५॥
चिबुकमाहिंनहिंश्यामतिलमोहियौपरतजनाय ।
मोहन दृग पुतरीन को स्याही रही समाय ॥६॥

पावस वर्णन — कवित्त ।

झुण्डन के झुण्ड आसमान माहिं भूमि रहे

ताको दुति कारे गिरि कज्जल समान की । घोर २ घुमड़ि २ घहराहिं ताहि देखि २ चौहूं मची कूकैं मोरवान की ॥ ढाहन चहत द्रुम कूलन कछारन के ज्योति श्याम सेवक यों तड़ित छटान की । धमकत पीरे लाल धौरे धुंवाँधार ऐसे धावन बिलोकु आली धूमरे घटान की ॥७॥

चातिक मयूर कान चाबे जात रात दिन छिन २ चोप चढ़े पावस के ब..ढ़ के । झिल्ली झनकारें झंझा पौन झकझोरत हैं छाये परदेश हैं कटैय्या तन गाढ़ के ॥ मिश्र श्यामसेवक वियोगिनी बचैंगी कैसे ...क उबरो है री परे तें काल डाढ़ के । पीर बढ़े ही में धीर धरि नहिं जात हाय बनि २ आवैं बीर बादर अषाढ़ के ॥८॥

झंझा पौन झोंकत झनक होत झिल्लिन की चलत प..हा प्राण बरजि २ उठै । दादुर रटत त्यौंही कोकिन की कूक मची चञ्चला चमकि चौहूं तरजि २ उठै ॥ मिश्र श्यामसेवक विहीन पिय सूनी सेज हेरि २ हाय जीव लरजि

लरजि उठै। कैसे धरौं धीर बीर घुमड़ि २ आज घन की घनेरी घटा गरजि २ उठै ॥ ९ ॥

पवन झकोरै भूमि २ झहराहिं लता थह-राहिं वनिता जिनहि पति त्यागे री। धावैं नभ धुरवा पियर लाल धौरे धूम मानौ सुरराज ते पोशाक इन मांगे री ॥ मिश्र कवि केकिन की कूकैं दादुरों की धुनि सुनि हिय धरके विदेश पिय पागे री। बरज २ हारी घेरि ये चहूंदिशि ते गरज भई ना घन गरजन लागे री ॥ १० ॥

पांवस नवाव चढ्यो उत ह्वै सु फौज लैकै विरह नरेश इतै सैनयुत आयो है। कारे घन पील उतै धावैं आसमान माहिं इतै नैन कज्जल कपोलन पै जायो है ॥ उतै श्यामसेवक है इन्द्र धनु इतै भौंह उतै विज्जु खड्ग है तखोना इतै भायो है। मारैं उत बूंदबान झारैं इत आंसू शर विरही अषाढ़ गाढ़ो संगर मंचायो है ॥ ११ ॥

सोहत अजूवा चहूंओर येर तम्बू तनो नील लाख सेत नहीं मेघ नभ छायो है। हरी भूमि

फर्श जूह जोगन चिराग जाल झाँझ त्यों झिंगीरा त्व झिल्लिन सुहायो है ॥ मिश्र श्यामसेवक स-रङ्गी ध्वनि मोरन की चातिकन मिलि के मलार राग गायो है। चञ्चला नचति घन गरज मृदङ्ग देखो मैनहार पावस नचैया बनि आयो है ॥

सीतल समीर वीर तीर सो चलन लाग्यो बोलि कै पपीहा तन अतन जगायो री। शृङ्ग पै पहारन कै नाचि २ आनँद सो चारौंओर शोर बहु मोरन सुनायो री ॥ लहलही लोनी २ लता लहरान लागी कहै श्यामसेवक समूह बक आयो री। घेरि २ दसहूं दिसान ते बिलोक हाथ आयो घनश्याम घनश्याम नहिं आयो री ॥ १३ ॥

चलत समीर मन्द २ चहुँओरन ते बरसैं बुलन्द बुन्द बादर घरी २। लहलही लता लागैं लतन सो भूमि २ चातिक सुनावैं बोल आनँद भरी २ ॥ मिश्र श्यामसेवक सुदादुर मयूर बोलैं कानन सुनात बानी मधुर खरी २। लखिये लखात कैसी सब्जु सुहाई भूमि पावस बिछाई मानो फरस हरी है ॥ १४ ॥

छोटौ २ स्वच्छ मुकता सी छवि रासी खासी सुन्दर छमा में बारि बूंदै छहराती हैं। दामिनी दमकि दुरैं दादुर मयूर बोलैं पौन-झोंक पाय लोनी लता लहराती हैं॥ मिश्र श्यामसेवक व-कालो नभ मांहिं दीसै मानो मैन-भूपति की ध्वजा फहराती हैं। कारी लाल पौरी बहुरङ्गन की चौहूं आज घेरि २ फेरि २ घटा घहराती हैं॥

दम्पति अँटा पै घटा घन की घनेरी हेरि पागे श्यामसेवक बहार बरसाती में। आछे पर-यङ्क पर प्रीतम मयङ्कमुखी देन लागे दसन अ-धर कञ्ज पाती में॥ प्रथम सुरति रचि फेरि बिपरीति रची हरषित दाऊ कुश्ल केलि मन-भाती में। झूमि २ चूमै कहूं मञ्जु मुख प्रानप्यारी राखै कहूं प्रीतमै लगाय निज छाती में॥१६॥

झूलन वर्णन - कवित्तं।

सुन्दर सुरङ्ग चटकीली चारु जामा तन चूनरि लसति अति लाल गात गोरे में। जेवर जराय-दार अंगन के नगजाल लाल ह्वै गये हैं रङ्ग

घटक अथोरे में ॥ मिश्र.श्यामसेवक सनेह-सने नेज आज पावत हैं आनँद अपार दृग जोरे में। मञ्जु मुख चूमि २ बार २ टूमि २ प्रेमछकी झूमि झूमि झूलत हिँडोरे में ॥ १७ ॥

चूनरि पटूका सोहै सुन्दर सुरंग रंग, छहरति छितिलों ललाई तेहिं छोरे की। शीतल बयारि लागे उघरत अङ्ग छकै मोहन निहारि कै लुनाई गात गोरे की ॥ त्यों त्यों श्यामसेवक पुलकि हरषात ज्यों २ ललना सलोनो थहराति दिन थोरे की । मुरि मुसक्यावैं नेन तिरछे मिलावैं ऐसी देखतै बनति आज झूलन हिँडोरे की॥१८॥

लाल को लुनाई पै लुभानो अलबेली गंड़ो लाल-हिय गोरी को गोराई गात गोरे की। कारे घुघुरारे सटकारे बार-वेस छाये मुख पर पाय झोंक पौन झकझोरे की ॥ मिश्र श्यामसेवक छके हैं छवि दोऊ देखि कही ना परति आभा अति दृग जोरे की। झूमि २ झुकि २ झिलि २ झेलि २ लूटें लेत दोऊ मोज झूलन हिँडोरे की ॥ १९ ॥

फहरति आगे आइ फिरि २ फाब भरी पट फहरानि वह पौन झकझोरे की। थहरानि थि-रनि सुथिर ह्वै रह्यो है मन चित्त चढ़ी चूनरी सुरंग रंग वोरे की ॥ कहै श्यामसेवक जिगर में रह्यो है गड़ि चुम्बक सी गोरी की गोराई गात गोरे को। झूलति हिये को हाय भूलतिन नेक कैहूं आँखिन में झूलति वा झूलन हिँडोरे की ॥

झूलत हैं झोंकि २, झिलि २ झेलि २ उ-झकति झुकनि झमति तहँ प्यारी है। छूटे केश मुख पै सुकबि छहराय रहे फहरि पिछौरा छिति छावत उँज्यारी है ॥ थहराति भयभीति थिरता गहैं न मिश्र थाम्हि २ भुज भरि राखत बिहारी है। श्याम अङ्क माहिं इमि सोहति पियारी मानो दामिनी-दमक नव-नीरद मझारी है॥ २१ ॥

झूलति हैं हरषि पोशाक लाल रंग साजि जरी कोर दुति देखि दामिनी लजाती हैं। शी-तल बयारि लागैं पट फहरात श्यामसेवक सु झोंकि लागे आपु थहराती हैं ॥ ऊपर ते नीचे

फिर नीचे ते सुऊपर को आवागम मचिथा हिँ·डौरि की लखातो हैं। मानो आसमान ते अजूबा परी भूमि माहिँ देखन बहार एक आती एक जाती हैं ॥ २२ ॥

घेरि २ घुमड़ि २ चारौंओर नभ धावति फिरति घटा घन की घहिरि कै। दामिनी द-मकि घन माहिँ दुरि दुरि जाय छावैं छबि बारि बूंदैं भूमि में छहिरि कै॥ मिश्र श्यामसेवक ल·खाति भहि सारी हरी शीतल बयारि बहै ठ-हिरि २ कै। ऐसी समै हेरि वैसे घायल गिरैंगे हरि खून री करैगी लाल चूनरी पहिरि कै॥२३॥

मोरन की कूकैं मञ्जु सुनहिं हरषि दोऊ घटा अवलोकहिं झरोखि ते अटारी कि। लहलही लोनी २ लता लहराय रहीं फिरैं इन्द्रवधू बीच भूमि हरियारी कै॥ मिश्र श्यामसेवक सुमन्द २ बूंदैं परैं बाढ़े हिये परम प्रमोद गिरधारी के। दामिनी दमकि ज्यों २ घनं में समाति त्यों २ मन में समाति प्यारी लागि की विहारी के॥२४॥

सवैया ।

शुभ कालिँदी कूल बहार अतूल कदम्बन फूल सुबास खरी । चहुँ फैलि रही हरियारी सुहार में डोलति डारहु में पसरी ॥ कवि सेवक स्यामरे झूलि रहे वृषभानुजा संग हिँडोर हरी । सजि लाल दुकूल मनो बिलसै चपला घन संग उमङ्ग भरी ॥ २५ ॥

झूलति झूलन मोदभरी हरुये २ सुर ते कहुँ रागति । सुन्दर सीतल पौन लगी फहरै पट दीपति भूषण जागति ॥ मोहन मोहनी को मुख हेरि बजावत बंशी सुने अनुरागति । सेवकश्याम सु झोंक लगी यहराय छबीलो पिया गर लागति ॥

चहुँओरन ते उनये ये नये धुरवा नभ ते लगि भूमि रहे । मोरवान की कूकै सु कान परैं लगी पौन लताद्रुम दूमि रहे ॥ कवि सेवकश्याम अटा पर दोउ घटान बिलोकत घूमि रहे । गलबाहीं दिये झुकि झूमि रहे मुख दोउन को दोउ चूमि रहे ॥ २७ ॥

चलै शीतल मन्द बयारि महाँ उपजावति मोद सँजोगिन को। हरी भूमि लखाति निगाह पसार सुदायक है सुख भोगिन को ॥ वर्षाऋतु सुन्दर सेवकश्याम उचाटन है चित जोगिन को । यह लोनी लता लहराति है ज्यों थहराति त्यों जान वियोगिन को ॥ २८ ॥

घन घेरि रहे हैं चहूंदिस ते तेहि में चपलान की जोति जगे । लखि बोलत चात्रिक दादुर मोर सुनि अति मोद हिये उमगे ॥ कवि सेवकश्याम बिचारि लखो अवलोकतहीं मन केलि पगे । धिग जात विदेश विहाय तिया जो निरन्तर ना छतियाँ से लगै ॥ २९ ॥

अँधियारी महान छई चहुंवा छटाकारो घटा नभ धावन को । चपला की चमङ्क चहूं दरसै छवि जिगन जोति जगावन की ॥ कवि सेवकश्याम सु कान परै धुनि केकिन कूक मचावन को । छतियाँ मैं लगी मनभावन को अति नीको लगे निसि सावन को ॥ ३० ॥

बहुभाँति बुझाय थकी सजनी मन में अपने फिर रागि गई। घहरानि सुनी घन की जबहीं तजि मान सु प्रेम में पागि गई ॥ यह सेवकश्याम सुदामिनी ते चकचौंधि पिया ढिग भागि गई। हुलसी बिलसी पुलकी नवला हँसि प्रीतम के हिय लागि गई ॥ ३१ ॥

हरियारी चहूं दरसै सरसै सुख लागे सुपौन सुहावन के । बरसै घन घेरि बड़ी २ बूंद लगे सब गावन गावन के। कवि सेवकश्याम हिँडोरन पै सँग में सजनी मनभावन के ॥ भुकि भूलन और भुलावन की अति नीकी लगैं दिन सावन के॥

लखती हैं घटा उनई घन की जेहिं में चपलान की जोति जगीं । धुनि चातिक मोरन की सुनि के गुनै कोककला मति केलि पगीं ॥ कवि सेवकश्याम उमङ्ग भरी पिय के अनुराग के रङ्ग रँगीं । धन ते धन सांवन की रतियाँ बतियाँ करतो छतियाँ में लगीं ॥ ३३ ॥

बोलन लागे मयूर चहूंदिशि पेखि सुकारी

घटा घन केरी । झिल्लिन की झनकार सुनाति सुदादुर की चढ़ी चोप घनेरी ॥ सेवकश्याम न सूझि परै कछु पावस की इमि रैन अँधेरी । सावन में तजि कै मनभावन हाय हमें परदेश बसेरी ॥

सोचत बीतत आठहुं जाम अराम न पीर बढ़ै बहुतेरो । जाति खरी पिय राति दिनैदिन होति छिनैछिन छीन घनेरी ॥ सेवकश्याम करा हति आह कै कालिहिं में निज नैनन हेरी । लै सुधि रे तलफै सफरी सम ये परदेसी पती तिय तेरी ॥ ३५ ॥

कारी कुरूप महा डरपावनि जासु छटा छिति ते नभ धाई । नील अकाश मसी मुख ऊपर श्यामघटा अलकावलि छाई ॥ सेवकश्याम बकावलि दन्त है बैन में दादुर की धुनि भाई । कैसे बचैंगी वियोगिनि होय पिशाचिनि पावस की रितु आई ॥ ३६ ॥

छाय रहे चहुँओरन ते घहराय रहे नभ में घनकारे । झिल्लिन की झनकार रही मिचि चा-

तिक मोर कुहूकहिं न्यारे ॥ सेवकश्याम धरौं किमि धीर सुडारत मैन दहे हियरा रे। पावस जाय विदेश बसे अब हाय हमें बिसराय पियारे॥

आज अकाश निहार सखी चहुँओरन घेरि घने घन धावैं। बोलहिं दादुर और मयूर सु तापर चातिक बैन सुनावैं॥ हाय जरो जिय जात सुने बिन सेवकश्याम हमें नहिं भावैं। ये बदरा बदराह अरी बरसैं निकरैं फिरि कैं घिरि आवैं॥

पावस वर्णन गद्य व पद्य * ।

अहा! विधि ने यह पावस रितु. देखो कैसी उत्तम निर्मित. की है। जिसकी छवि दृग्गोचर होतेही हर. नर के दिल पर. एक अपूर्व खुशी बसती है. और प्रिया में मति फँसती है। इस रितु में जो व्यक्ति जहाँ पर. रहते हैं वे सकल वहाँ पर. बेबस होकर रह जाते हैं- और नहीं जाने पाते हैं. देखो तड़ित्युक्त यह कैसी. काली घटा

* जहाँ २ बिन्दु है वहां ठहरने से छन्द की गति होती है बराबर की चौथी लकीरों में रहने से गद्य है।

छाई है जैसी. कज्जलगिरि के उच्च सिखर पर दावाग्नि की ज्वाल। मनोहर. मोरों का रव चारों दिशि से. सुनाई पड़ता है जिससे. संयोगी हर्षित होते हैं. विरही वेचारे रोते हैं. वे धनि है जे पिय के सँग में. सुन्दर सूही सारी अँग में. धारण किये और गलबाही. दिये हुये घन की परछाहीं. छत पर से अवलोक रही हैं। उनके सदृश कोई नहीं है. आहा इस जग में उनहीं का. जीवन सुफल है जे निज पीका. पानि गहे हुए घूमि रही हैं। फिर २ आनन चूमि रही हैं । जो घर में पियप्यारे होते. तो गर से लग २ के सोते। विरहिन मन में सोच रही हैं, फिर २ आँसू मोच रही हैं। झिल्ली दादुर बोल रहे हैं, केकी शोर मचाते हैं। चातिक पिय २ रट नाधे हैं। घन फिर २ घहराते हैं। बादर बरस २ जाते हैं । और फेरि घिरि आते हैं। इतस्ततः सुन्दर बक नभ में जाते हुये देखाते हैं। चारो दिशि सबजी ही सबजी छौनी में नजर आती है । इन्द्रवधू

फिर रही हैं। रवि की प्रभा मन्द देखलाती है पक्षीगण निज २ खोंथों में बोल रहे हैं। कोई पर झारते हैं कोई चोंच गहे हैं। रङ्ग २ की घटा गँगन में दौड़ रही हैं। झंझा बात से कहीं अचञ्चलता नहीं है।

नन्ही नन्ही बूँद पडती हैं, कहीं झड़ी लग जाती है। बिजली चमक रही हैं। फिर २ घोर घटा घहराती है। जिधर देखिये तिधर नीर है नहरें मग में जारी हैं। बाँध खेत सब ताल हो गए। नदियां नद से भारी हैं *।

इति प्रथम कवित्त भाग।

* एक बार जिला आरा रियासत सूर्यपुरा के राजा राजराजेश्वरीप्रसादसिंह जी ने कहा कि ऐसी कविता बनाइये जिसको गद्य और पद्य दोनों में पढ़ लेवें, उस समय वहां और भी कवि मौजूद थे, परन्तु किसी ने नहीं बनाई केवल उक्त राजा साहब ने बँगला के प्रसिद्ध छन्दों की भांति अर्थात् बेतुक का छन्द बनाया। और मैंने यह पावस का वर्णन उनके आज्ञानुसार गद्य पद्य में तुक सहित किया।

(अथ गीत भाग)

(लावनी)

चहुँदिशि ते घोनई आज घटा कारी है ।
बिन श्याम दहै तन मैंन बैस बारी है ॥
उत आसमान ते मेघ नीर बरसावैं ।
इत मेरे नैन अँसुन की झरी लगावैं ॥
फिर तापर मोर पपीहा बोल सुनावैं ।
हिय के विरहागिन को दूनी धधकावैं ॥
सुन सुन के (१)अश्क (२)चश्मों से अब जारी है ।
बिन श्याम दहै तन मैन बैस बारी है ॥१॥
मोहिं वे मोहन डरवावें ये घन कारे ।
अब जाइ बसे हमसे नदनन्दन न्यारे ॥
बेदरद श्याम नहिं आये तरफ हमारे ।
सौतिन के जाय भये प्रानन के प्यारे ॥
दिन रैन सखी मोपर आफत सारी है ।
बिन श्याम दहै तन मैन बैस बारी है ॥२॥
के जोर पवन अति सोर झकोर मचावे ।
ताको सहाय लै मनमथ बान चलावे ॥

(१) आँसू । (२) आँख ।

बिन कहे अरी सुख हाय श्याम कहि आवै।
पिय के मिलिवे को सजनी जिय ललचावै॥
जालिम दिलदारन कीन्ही दिलदारी है।
बिन श्याम दहै तन मैन बैस बारी है॥३॥
कुबजा के भये वस मारि नेह को भाला।
मनमोहन परवाने जादू कछु डाला॥
इमि सेवकश्याम बिहीन दीन ब्रजबाला।
जिमि मीन विचारी तलफैं फँसिके जाला॥
ऐसी निर्दय उस जालिम की यारी है।
बिन श्याम दहै तन मैन वैस बारी है॥४॥

(ख्याल दौगर)

आज आसमां पर छाई है घटा नील घहरातो है। चमक दमक से देखो क्या यह (१)बर्क छटा छहराती है॥

(चौक प्रथम)

जुल्फ़ (२) सियह उस(३) माह लका की याद मुझे जिम दम आवै। परेशान हो कर के तबियत मेरी उस दम घबड़ावे॥ (४) कौसकोज़ा

(१ बिजली। २)स्याह, श्याम। (३ चन्द्रवदन (४)इन्द्रधनुष।

(५) अबरूसा देखि (६) जुज़ ग़म कि नहिं देख-लावें। घुमड़ २ के इधर आँख घन (७) अश्क (८) आब को बरसावै ॥

(शेर)

आज चारो (९) सिम्त से छाई है यह कारी घटा।
देखिये क्या ज़ोर से गरजे है यह भारी घटा ॥
(१०) शोलये दिल्को बढ़ाती है जो यह प्यारी घटा।
आबं बारी करके करवाती है खूंबारी घटा ॥

(उड़ान)

सुर्ख रङ्ग के (११) अब्र देख उस गुलरू को सुध आती है। चमक दमक से देखो क्या यह वर्क छटा छहराती है ॥

(चौक दोयम)

(१) जाना के (२) क़द के मिसाल में देख (३) सरोगुलज़ारों को। उसी तरफ़ एक टक रहता हूं कर नैधा (४) खूंबारों को ॥ पेचताव

(५) भौंह। (६) सिवाय। (७) आँसू। (८) पानी। (९) ओर।
(१०) ज्वाला। (११) मेघ। (१) प्रिय। (२) (३) बाग़।
(४) रुधिरवर्षक।

में हुआ देख कर नरगिस रंग के तारों को । रंज (५) अलम है मेरे दिल में ग़म मेरे दिल-दारों को ॥

(शेर)

(६) बोस्तां में जाके जो (७) ज़ारी किया मैं (८) पुर मलाल । अश्क खूं मेरे पड़े हुये है गुल गुल्लाबलाल ॥ देख कर रँग (६) ज़र्दगुलसोमी है केसरिया मिसाल । तुझ बिना ग़मगी है नरगिस देख कर मेरा यः हाल ॥

(उड़ान)

मेरे ग़म से दाग़दार गुललाला की अब छाती है। चमक दमक से देखो क्या यह बर्क छटा छहराती है॥

(चौक सेयम)

देख बाग़ यह आँख मूंद के देखूं वह गुलरू गुलज़ार। जिसके देखे बाहेर होता है एक दम (१०) महजूरी (११) ख़ार ॥ है क्या क्या उस

(५) दुःख। (६) बाग़। (७) रोना। (८) दुखपूरित। (६) चमेली का फूल। (१०) वियोग। (११) कांटा।

बाग़ में बतलाओ तो मुझको भी अय यार । कहा नहीं जाता पर कहता हूं थोड़ा सुनिये दिल्दार ॥

(शैर)

(१) औवलन सम्बुल है फिर बादाम (२) नर्गिस दो निगर । उसके आगे एक तोता फेर है लाले शकर ॥ उसके आगे पुर जमाले सिल्क (३) गौहर कार नज़र । आइना है उसके आगे सेव सुन्दर फिर उधर ॥

(उड़ान)

फेर कबूतर को देखो आगे बहार देखलाती है। चमक दमक से देखो क्या यहवर्कछटाछहरातीहै ॥ उसके आगे दो अनार सोने के सुन्दर हैं ग़मख्वार । एक (४) वर्तफिर चीता नाजुक आगें केला सरो बिचार ॥ उसके आगे नीलो फर है करूँ कहां तक मैं (५) गुफ्तार । फेर बहुत उसके आगे दुपहरिया गुल के सुर्ख कतार ॥

---

(१) प्रथम । (२) फूलविशेष इपमाननेन । (३) मोती-लड़ी । (४) जल का भौंरा भँवर । (५) बात ।

देखिये उस बोस्तां में हंस क्या खुश रङ्ग है ।
सब परिन्दो से निराला एक उसका ढङ्ग है ॥
(६)फील है फिर उसके आगे देख कर दिलदङ्ग है ।
देख ऐसे बाग़ को नरगिस पिये अब भङ्ग है ॥

(उड़ान)

कहै श्यामसेवक ऐसा कर ख्याल रहाई आतीहै ।
चमक दमकसी देखो क्या यह बर्क छटाछहराती है॥

(लावनी झूला)

अति सुन्दर रसिक सुजान प्रीति रस बोरे ।
कुञ्जन में झूलत श्यामा श्याम हिंडोरे ॥
ललितादिक सखियां भरि मनमोद झुलावैं ।
कोऊ मलार सावन कजली कोउ गावैं ॥
वंसहिं सुर मोहन मुरली मधुर बजावैं ।
सुन सुन के राधिका प्यारी हिय सुख छावैं ॥
दोऊ हँसहिं परस्पर देखि देखि मुख ओरे ।
कुञ्जन में झूलत श्यामा श्याम हिंडोरे ॥
कारे कारे घन आसमान महँ गरजैं ।
चपला चमकति चकचोध तचरैव तव लरजैं ॥

(६) हाथी ।

बह शीतल सौंध समीर मोर्द मन सिरंजै ।
मचकी मचकात मन मुदित जदपि बहु बरजै ॥
धीरे सी झुलावहु कहति धरक दिल मोरे ।
कुञ्जन में झूलत श्यामा श्याम हिंडोरे ॥
जब तन में लगति बयारि पटूकी फहरैं ।
दुति दौरत चारहुँ ओर छिटिकि छिति छहरैं ॥
मोतिन की माला सुरसरि सी उर लहरैं ।
छूटी हैं अलक कपोलन ऊपर बिहरैं ॥
चिकनी चटकीली लटकति गालन गोरे ।
कुञ्जन में झूलत श्यामा श्याम हिंडोरे ॥
जब लागत भारी झोंक कमर बल खाती ।
तब सिसिकि सिसिकि कै बार बार थहराती ॥
कर पकड़त मोहन गले डरपि लगि जाती ।
ज्यों दामिनि घन में तब यों छबि दरसाती ॥
सुख लूटत शिवकश्याम दोऊ दृग जोरे ।
कुञ्जन में झूलत श्यामा श्याम हिंडोरे ॥३॥

(कजली)

हरि २ हिय में बसत हमारे मोहन प्यारे रे हरी ।

मोरपखन को मुकुट मनोहर सिर में सोह रामा,
हरि २ मकराकृतकुण्डल कानन में धारे रे हरी ॥
ललितकपोलन ऊपर इत उत लहरि रहे हैं रामा,
हरि २ काकपच्छ अति कारे घूघुरवारे रे हरी ।
घनसी तनमें पीतवसन छविलसतिबिज्जुसौरामा,
हरि २ गर में गुंजनमाला जोतिपसारे रे हरी ।
सेवकश्यामकाछनी कटिमें करमेंमुरलीसोहै रामा,
हरि २ ब्रजयुवतिन हगतारे नन्ददुलारे रे हरी ॥

हरि २ कैसी प्यारी चलति चाल मतवाली रे हरी ॥ पांउ कड़ा कर कंकना सोहै बाँह विजायँठ रामा, हरि २ बेसुर नाक करनफुल कानन बाली रे हरी सुरँग चुनरिया लगति बयरिया फहरति आवे रामा, हरि २ ताकी फैलि रही है चहुँ दिशि लाली रे हरी । सेवकश्याम उरोज उचौं हैं यहरत आवैं रामा, हरि २ लहरति आवे तापे चोटिया काली रे हरी ॥२॥

हरि २ घेरि घुमड़ि चहुं ओर बदरवा बरसै रे हरी । पिय पिय रटत पपिहरा पापी मो-

रवा शोर मचावै रामा, सुनि २ बिरहानल में टुवरी देहियाँ भारसै रे हरी। शीतल बहति बयरिया लागति मोहिँ लूह सी रामा, हरि हरि इन्द्रवधू अँगार सी महि में दरसै रे हरी। कछुन सोहाय हाय नहिँ भावै सून सेजरिया रामा, हरि हरि सेवकश्याम मिलन को जियरा तरसै रे हरी॥ ३॥

अब यह प्यारी पास कहै को व्यथा हमारी रे हरी। राग रङ्ग कछु मनहिँ न आवै खान पान एकहु नहिँ भावै रामा, हरदम मोहि होति है चरचा एक तिहारी रे हरी। संजोगीजन मुदित हिँडोरा झूलि रहे लीन्हे तिय कोरा रामा, हरि २ हरि २ यह बढ़ति दाह उर भारी रे हरी। सेवकश्याम बिरह में दीना जैसे जल बिन तलफत मीना रामा, हरि २ निशिदिन रहत नैन ते अँसुआ जारी रे हरी॥ ४॥

हरि २ फिरति मलिनियां बगिया में मतवारी रे हरी। इत उत बिरछन २ के तर घूमति डोलै

रामा, हरि २ फूलि लखि २ रुकति चलति लखि खाली रे हरी। गहि २ लतिका तकि २ फुलवा टोरि २ कै रामा, हरि २ भरति मुदितमन दबौ बगल जो डाली रे हरी। सेवकश्याम उठत कर खँसि २ जात अँचरवा रामा, हरि २ उघरि जात जोबनवां दरसति लाली रे हरी ॥ ५ ॥

हरि २ चढ़त नितम्ब बढ़त आवे जोबनवां रे हरी। छिन २ होति छीन कटि, दिन २ दून बड़े दृग रामा, हरि २ सेवकश्याम देखि तरसत मेरे मनवां रे हरी ॥ ६ ॥

कजरी राह दूसरो।

उड़ि को उड़ि २ जात अँचरवा, मुख को घुँ-घुँटा टरि २ जाय। ऐसी बहति बयरिया बैरन, जियरा मेरो जरि २ जाय । सेवकश्याम दीठि मोहना की, फिरि २ परि २ जाय ॥ ७ ॥

अँगिया पहिरै रे गूजरिया, छतिया दोनौ छटि २ जाय । वारत ज्योंत करि ढोल बनावे, तबहूं सँटि २ जाय ॥ सो २ ल्यावै नित दरजि-नियाँ, नितहीं घटि २ जाय। सेवकश्याम अँटति जो कैसहुं खोरिया फटि २ जाय ॥ ८ ॥

सारी रतिया मोहिँ जगावै सैयाँ बेदरदी न सोहाय। हँसि २ घूंघटवा उघारै लखि २ मुख मेरो ललचाय ॥ बरजों बहुत कही नहिँ मानै छतिया लेत लगाय । सिवकश्याम चाहि मुख चूमै झूमै गल भुज नाय ॥ ६ ॥

अँगिया पहिरै रे गूजरिया, खोरिया दोनो फटि २ जाय। फिरि २ फेर फार पहिरावै, छाती नहीं समाय ॥ करि २ यतन हजारन हारी, ठीक नहीं ठहराय । सिवकश्याम चकित दरजिनियाँ, वह मन में मुसकाय ॥ १० ॥

(कजली राह साँवलिया)

जुलुफ मुख छूटी रे साँवलिया, अमल कपोलन् ऊपर नहरैं जमुन की फूटी रे साँवलिया। कै नाचहिं बच्ची नागिन की चन्द पर लूटी रे साँवलिया ॥ सिवेकश्याम चढ़त बिष देखि लगति नहिँ बूटी रे साँवलिया ॥ ११ ॥

सुरति तोरी बाँकी रे साँवलिया। नैन बान हैं भौंह कमान हनत हिय झाँकी रे साँवलिया॥

शानभरी वह सैन तिरोछो, देति दिल टाँकी, रे साँवलिया। सेवक श्याम रोज येहि मुख की दिये जा झाँकी रे साँवलिया ॥ १२ ॥

जहर कहँ पाये रे नागिनियाँ। भीजे जहर तोहि लखतेही, और बिख खाये, रे नागिनियाँ॥ तेरे डसे डगर में डोलें, बदन मुरझाये, रे नागिनियाँ । सेवक श्याम रहति सुधि नाहीं, लहर के आये, रे नागिनियां ॥ १३ ॥

अँटकि गे केसन में बेसरिया। रहिये लाल झोंक तोहि दीजे, गुँथी मुकतेसन में, बेसरिया॥ निज मनिमानिक की जोतिन सो, बढ़ी नखतेसन में बेसरिया। सेवक श्याम दूसरी ऐसी मिलति नहिं देशन में बेसरिया ॥ १४ ॥

सुरति तोरी भोली, रे गुजरिया। सारी श्याम लसति तन गोरे सबुज रंग चोली, रे गू० मन्द २ मुसक्यान लजोली, अमीरस घोली, रे गूजरिया। सेवक श्याम पियूष निचोरे मधुर तोरी बोली, रे गूजरिया ॥ १५ ॥

दरद नहिँ जानै रे बेदरदा। मूखत ओंठ दुखे करिहाई, मजा मन ठानै, रे बेदरदा॥ हाथ जोरि हाहा करि हारो, नहीं उर आनै रे बेदरदा। सेवक-श्याम करौं का दैया, कहो नहिँ मानैं रे बेदरदा॥

गजब गुजारै हो चूनरिया। अंगन के सब गहनन ऊपर रंग पसारै हो चूनरिया॥ लगत बयारि फहरि चारौदिशि अतर बगारै हो चूनरिया। सेवकश्याम जीउ आशिक को बरबस मारै हो चूनरिया॥ १७॥

कजली दूसरी राह साँवलिया।

* बीती जाति जवानी, ये साँवलियाँ। तुम बिन चैन परत छिन नाहीं, बहत नैन सें पानी ये साँवलिया॥ छिन छिन छीन होति हौं प्यारे देह सकल पियरानी ये साँवलिया। सेवकश्याम निठुर भये पूरे सुरति हमारि भुलानी ये साँवलिया॥

तुम बिन चैन न आवै ए साँवलिया। नीकी नींद गई नैनन ते, सोचत दिवस गंवावै ए साँवलिया॥ चढ़ि कै अँटा झरोंखन झाँकै, दरस

* इन कजलियोंको दादरा में भी गा सकते हैं।

बिना दुख पावे एँसाँवलिया। सेवकश्याम विसूरत सोचत रजनी दिवस गँवावे, ए साँवलिया ॥१९॥

छिनहूं सुरति न भूले ए साँवलिया । यह तिरछौहीं चितवनि तेरी निसिदिन हियरा झूले ए साँवलिया ॥ मञ्जुल मुख मुसक्यात माधुरी नेक सुधा नहिं तूलेए साँवलिया। सेवकश्याम सलोनी सूरति हरदम अँखियन भूले ए साँवलिया ॥२०॥

दिये जा तनिक माखनवाँ ये गूजरिया। तुलि नहीं सखीं और ग्वालिनी एक तुहीं लाँखन मा ये गूजरिया ॥ ऐसो मधुर नहीं दूजो को जैसो यह चाखनवाँ ए गूजरिया । सेवकश्याम और काँ वरनी मधुराई भाषन मा ए गूजरिया ॥२१॥

चढि चलु तनिक हिँडोरवा ए गूजरिया । शीतल सुखद बयारि बहति है बोलि रहे चहुं मोरवा ए गूजरिया ॥ मौन गहे का भूमि निहारति, लखु मुख चन्द चकोरवा ए गूजरिया। सेवकश्याम फेरि पछितैहै भूलु बैठि पिय कोरवा ये गूजरिया ॥ २२ ॥

अद्भुत रँग देखावैं ए रैमुनियाँ। कोऊ नीर पियहिं इत उत लखि कोई गर खजुवावैं ए रै-मुनियाँ ॥ चोंच बोरि कोई मुख धोवैं कोई पर फहरावैं ए रैमुनियाँ। सिवकश्याम नीर में हिलि के कोई मुदित नहावैं ए रैमुनियाँ ॥ २३ ॥

जोबना भइल उतपाती ए साँवलिया। नेक न घर ते निकसन पाऊँ, जब ते उमगलि छाती ए साँवलिया॥ काम धाम कछु मन नहिं भावै, चरचा बोरि सोहाती ए साँवलिया। सिवकश्याम भली लड़िकैयाँ खिल रहै दिनराती ए साँवलिया ॥

(कजली राह दूसरी)

मेहँदी न हँथवाँ लगावे मोरी गोइँयाँ रे। याकी भीतर अलख आगि है तेहिं में अब न जलावै मोरी गोइँयाँ रे ॥ सारे सुरुख देति दुख भारी, आँखिन ओट बढ़ावे मोरी गोइँयाँ रे । सिवकश्याम परौं पायन पै, नाइन को न बोलावे मोरी गोइँयाँ रे ॥ २५ ॥

उन बिन कैछू न सोहाय मोरी गोइँयाँ रे। घर आँगन भावत नहिं नीको. बन कै सरिस

लखाय मोरी गोइँयाँ रे ॥ सूने भवन सेज यह सूनो जियरा देखि डराय मोरी गोइँयाँ रे । सेवकश्याम बिसूरत सोचत रजनी दिवस सिराय मोरी गोइँयाँ रे ॥ २६ ॥

आज घटा घहराय मोरी गोइँयाँ रे । देखि २ बन माहिं रहे हैं, मोरवा शोर मचाय मोरी गोइँयाँ रे ॥ पिय २ बोलि पपीहा पापी, जियरा देत जलाय मोरी गोइँयाँ रे । सेवकश्याम बिना प्रिय प्यारे, अब न बचौंगी हाय मोरी गोइँयाँ रे॥

हमहीं से लेती हैं उड़ान अब टैया रे । पूछत बात हरि की ताने नमहीं पे भौंह कमान अब टैया रे ॥ करत रहीं कर जोरि विनय काल्ह, आज औरही सान अब टैया रे । सेवकश्याम कौन गति कहियै, खाती हैं पलकन कान अब टैया रे ॥ २८ ॥

(कजरी राह साँवरगोरिया)

तुहीं लिहिउ मनवाँ लोभाय साँवरगोरिया । बाँके चूते चितै तिरछोहैं, मुरि २ मृदु-मुस-

क्याय साँवरगोरिया ॥ घुँघुट खोलि फेरि तनी वैसहिं देतिउ बदन देखाइ साँवरगोरिया। सेवक श्याम विहँसि छतिया में, लेतिउ तनिक लगाय साँवरगोरिया ॥ २६ ॥

तोरे कर जियरा बिकान रे सँवलिया। रैन दिवस घायेल सी घूमौं, काहे चलाये नैना बान रे सँवलिया॥ घर बाहेर मन नेक न लागै तरसै हरदम जान रे सँवलिया। सेवकश्याम दरस किमि पाऊँ, रहत सदा यह ध्यान रे सँवलिया॥

कैसा देखावलऽ बहार बादरवा। सेवकश्याम घुमड़ि छिन बरसै, छिनहीं में छावलऽ पहार बादरवा ॥ ३१ ॥

(कजली दोहावली)

पिय बिन सूनी रे सेजरिया गोईं मोहीं न सोह।

दोहा।

छाय रहे चहुंओर तें, कारे घन नभ माहिं।
कामिनि सी तेहिं में दुरीं, ये दामिनि दरसाहिं॥
पिय २ बोलै रे पपीहा, पापी जिया अकुलाय।

दोहा।

चैन परत नहिं नेकहूं, रैन बिसूरत जाति।
मैन बान हिय में हने, जिय राखौं केहिं भाँति॥
नैना निँदिया न आवै वही सूरति लखाय।

दोहा।

मैन मरोर हिये महाँ, नेक परत नहिं चैन।
विरहागिन बरि बरि उठै, भरि भरि आवैं नैन॥
सुधि मोरी लीन्हीं नहीं रहे कौने देसवा में छाय।

दोहा।

सेवकश्याम बियोग को, रोग लहै नहिं कोय।
छिन छिन उठत मरोर हिय, दिन २ दुर्बल होय॥
मन तैरे लागे रे कहूं ना अब मैं जाऊँ कहाँ हाय॥

(राग मलार)

मोहिं डेरवावैं सखि घन कारे, बोलहिं मोरन की बरी आली। गरजि २ के देहिं नगारे॥ मून जानि वन बोरन आये, बरसि रहे हैं मूसर धारे। सेवकश्याम विना गिरधर के मारें काहे न मेघ हमारे॥ ३३॥

लखु छबि दसरथ-राजदुलारे। क्रीट मुकुट कुण्डल अति सोहत मुनि-जन मन निज हारे।

लोचन सुफल करहु सब कोऊ, निरखि आज सिय प्यारे । सेवकश्याम लखि रघुबर को तन-नहिं रहत सम्हारे ॥ ३४ ॥

आज सखी नभ में हैं घन छाये । मोर सोर चहुँओर करैंरी, पपिहा बोल सुनायो ॥ आधी रैन बीतिगै सजनी अबहूं पीउ न आयो । सेवक श्याम विरह हिय दाहै, किन सौतिन बिलमायो ॥

खबर मोरी लीजो नन्दकिसोर । प्रेम वृक्ष के सींचन की सुधि कीजो हे चित-चोर ॥ बेगि आइयो व्रज को प्यारे, विरह करे ना जोर । सेवक लाज राखियो मोरी, होन न पावे भोर ॥

दोहा ।

सम्बत् बसु श्रुति निधि शशी सावन सुदि शिव नैन ।
किय बहारबरषा सु यह सेवकश्याम सचैन ॥३७॥
केशव वंश सनाढ्य द्विज नाम सु सेवकराम ।
काव्य माहिँ कहुं शिश्र कहुँ भाषत सेवकश्याम ॥

इति श्रीरीवाँराज्य मजगवांनिवासी श्रीकविन्द शिरोमणि केशववंशीय सनाढ्य मिश्र सेवकश्याम रचित वर्षाबहार समाप्तम् ।